50

यरूशलेम में जाना

बाइबल पाठ #20

VI. तीसरे फसह से यीशु के बैतनिय्याह में आने तक (क्रमश:)।
  ट. गलील में अन्तिम शिक्षा: भाइयों के बीच समस्याएं (मत्ती 18:15-35)।
  ठ. सेवकाई बदलकर यहूदिया में जाती है (यूहन्ना 7:1; मत्ती 19:1)।
    1. यीशु को उसके भाइयों द्वारा झोंपड़ियों के पर्व में जाने का आग्रह (यूहन्ना 7:2-9)।
    2. यीशु का चुपके से यरूशलेम में जाना (लूका 9:51-56; यूहन्ना 7:10)।
    3. मार्ग में: चेले बनने पर शिक्षा (लूका. 9:57-62; देखें मत्ती 8:19-22)।
  ड. यरूशलेम में: झोंपड़ियों का पर्व।
    1. पर्व में: मन्दिर में शिक्षा देना (यूहन्ना 7:11-36)।
    2. पर्व के अंतिम दिन: जीवन के जल पर शिक्षा (यूहन्ना 7:37-52)।
    3. पर्व के बाद: अतिरिक्त शिक्षा।
      क. व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री (यूहन्ना 7:53-8:11)।

परिचय

सच्चाई से भरा यह अध्ययन परिवर्तन का पाठ है, जिसमें महान गलीली सेवकाई के अन्त से पलिश्तीन के सब भागों में सेवकाई के समाप्त होने के आरम्भ की बात मिलती है। यह अन्तिम सेवकाई डेरों के पर्व से अगले फसह तक लगभग छह माह तक चली।

इस सेवकाई की एक मुख्य आयत लूका 9:51 है: ''जब उसके ऊपर उठाए जाने के दिन पूरे होने पर थे,[1] तो उसने यरूशलेम को जाने का विचार दृढ़ किया।'' यूनानी पवित्र शास्त्र का मूल अर्थ है, ''जब उसके ऊपर उठाए जाने के दिन पूरे हो गए, *तो उसने यरूशलेम की ओर रुख किया*'' (देखें KJV)। यीशु को हम यहूदिया और पिरिया में घूमते देखेंगे, परन्तु उसका ध्यान यरूशलेम में होने वाली अपनी मृत्यु पर रहता था।[2] बुराई के मंडराते बादल भी उसे रोक नहीं पाए, बल्कि वह उस अंधेरी घटना की ओर और भी दृढ़ता से बढ़ता गया। एक अनुवाद[3] में कहा गया है, कि ''वह दृढ़ता से यरूशलेम की ओर बढ़ता गया।''

चेलों की चिन्ता (मत्ती 18:15-35)

प्रभु के साथ दक्षिण की ओर जाने से पहले, हमें उसकी उत्तरी सेवकाई को समेटने के लिए रुकना चाहिए। गलील में उसके अन्तिम संदेश से चेलों में यह बहस छिड़ गई कि राज्य में सबसे बड़ा कौन होगा (मत्ती 18:1; लूका 9:46)। यीशु की प्रतिक्रिया का पहला भाग बच्चे जैसा बनना और दूसरा भाग दूसरों के साथ मिलकर चलने पर केन्द्रित था। पिछले पाठ में हमने पहले विषय पर अध्ययन किया था; अब हम दूसरे पर विचार करेंगे।

संगति का ध्यान (आयतें 15-20)

यीशु ने पहले ही दूसरों के विरुद्ध पाप करने पर बात की थी (मत्ती 18:6; मरकुस 9:42)। अब वह प्रश्न का दूसरा पक्ष बताने को तैयार था: यदि उसके सुनने वालों के विरुद्ध कोई पाप करे, तो उन्हें क्या करना चाहिए? मत्ती 18:15 इसकी मुख्य आयत है: ''यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे,[4] तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा। यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया।''[5]

''अकेले में'' वाक्यांश को रेखांकित कर लें; मूल शास्त्र में ''केवल तेरे और उसके बीच'' है (देखें KJV)। जब कोई कुछ ऐसा करता है, जिससे आपको दुख होता है, तो आपको बात को और बढ़ाकर ढिंढोरा नहीं पीटना चाहिए; बल्कि उसे अपने तक रखकर जहां तक हो सके सुलझाने की कोशिश करें। गेयल ओलर[6] ने इसे इस प्रकार कहा है: ''पति या पत्नी, मित्रों या सम्बन्धियों या यहां तक कि अपने कुत्ते से भी शिकायत करने से पूर्व, *पहले* उसके पास जाएं।''

आप आपत्ति कर सकते हैं, ''पर यह कठिन है!'' हां यह कठिन तो है, परन्तु आवश्यक है। इस आज्ञा को मानने से बहुत सी विघटनकारी परिस्थितियां टल जाएंगी। इसके विपरीत, यदि हम मसीह की बातों को अनदेखा करते हैं अर्थात हम मामले को सुलझाने के बजाय अपने आस-पास के सब लोगों से अपनी नाराजगी का ढिंढोरा पीटते हैं तो लोग हमसे किनारा करने लगेंगे। जब ऐसा होता है, तो मसीह की देह को बड़ी हानि होती है।

उस भाई से, जिसने आपके विरुद्ध पाप किया है, सही व्यवहार करने पर (गलातियों 6:1), सामान्यतया समस्या सुलझा ली जाएगी, परन्तु आवश्यक नहीं कि हर मामले में ऐसा ही हो। ऐसी स्थिति में यीशु की बात मानकर काम करें कि आगे क्या करना है: ''और यदि वह न सुने, तो और एक-दो जन को अपने साथ ले जा कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाए'' (मत्ती 18:16)। पुराने और नये दोनों नियमों में दो या तीन गवाहों की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है (व्यवस्थाविवरण 19:15; 2 कुरिन्थियों 13:1)। दूसरे लोग पहले हुई बात के बीच में अपनी समझ मिलाकर उसे सुलझाने में सहायता कर सकते हैं,[7] और इससे निश्चय ही बाद में यह गवाही होगी कि वह सभा किस लिए हुई थी।

यदि इससे अपेक्षित परिणाम न निकलें तो क्या करना चाहिए? यीशु ने कहा, ''यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे। परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने,

तो तू उसे अन्यजातियों और महसूल लेने वाले के समान जान'' (मत्ती 18:17)। मसीह द्वारा ''कलीसिया'' शब्द का इस्तेमाल ध्यान देने योग्य है।[9] दो अध्याय पहले उसने अपनी कलीसिया बनाने की प्रतिज्ञा की थी (मत्ती 16:18)। अब उसने कलीसिया को अपनी संगति में मिलाने या उससे निकालने के लिए प्रभु द्वारा अधिकृत लोगों की एक मण्डली के रूप में दिखाया।

यीशु ने यह स्पष्ट नहीं किया कि ''कलीसिया को'' *कैसे* कहा जाए। कई बार, ऐसी बात सार्वजनिक आराधना सभा के बजाय सदस्यों की किसी विशेष सभा में बताना उचित होगा। यदि मण्डली में ऐल्डर हैं, तो वे ऐसे मामलों को निपटाने का अच्छा ढंग बता सकते हैं।[9]

मेरी दिलचस्पी सबसे अधिक ''यदि वह कलीसिया की भी न माने'' वाक्यांश में है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि गलती करने वाला कलीसिया के निर्णय को मानने से इनकार करता है (देखें 1 कुरिन्थियों 5:12ख)। मैं ''कलीसिया'' को इसके मूल अर्थ (यीशु के लहू द्वारा उद्धार पाए हुए) में ही लेना चाहूंगा और इस आयत की व्याख्या इस प्रकार करना चाहूंगा: ''यदि वह प्रेम से अपने पास आने वाले मसीह में अपने भाइयों और बहनों की भी न सुने ...।'' यदि पाप करने वाले भाई को मण्डली के सब सदस्य रो-रोकर प्रभु में लौट आने के लिए कहें? इससे कैसा प्रभाव जाएगा? इतना प्रेम करने वालों का विरोध तो पूरी तरह से पाप से भरा कठोर मन ही कर सकता है।

यदि इसके बाद भी पाप करने वाला वापस न आए तो? फिर यीशु ने कहा कि कलीसिया को उससे संगति तोड़ लेनी चाहिए: ''तो तू उसे अन्यजातियों और महसूल लेने वाले के समान जान'' (मत्ती 18:17)।[10] ''अन्य जातियों और महसूल लेने वाले के समान'' यह कहने का कि ''जैसे वह मसीही हो ही न'' एक अलंकारिक ढंग है। दूसरे पदों से यह स्पष्ट होता है कि इस कार्य का मुख्य उद्देश्य दण्ड देना नहीं, बल्कि उस व्यक्ति को होश में और प्रभु में वापस लाना है (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 3:14, 15)। सच्चे मन से अपनाया गया अनुशासन घृणा और ईर्ष्या को नहीं, बल्कि प्रेम और लगाव को दिखाता है (देखें इब्रानियों 12:6)।

किसी बच्चे को अनुशासन में लाना सुखद नहीं होता और मसीह में किसी भाई या बहन को अनुशासन में लाना भी सुखद अवसर नहीं होता। यीशु इस बात को जानता था; इसीलिए अपने सुनने वालों को प्रोत्साहित करने के लिए उसने उन्हें आश्वासन दिया कि यदि मण्डली इन बातों पर अमल करती है तो परमेश्वर उनके साथ होगा (मत्ती 18:18-20[11])। आयत 20 एक प्रसिद्ध वचन है: ''क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच होता हूं।'' हम इस स्नेही प्रतिज्ञा की सामान्य प्रासंगिकता बना सकते हैं, परन्तु इस संदर्भ में, याद रखें कि मसीह उसके नाम में कलीसिया के अनुशासन को लागू करने के लिए दो या तीन के इकट्ठा होने की बात कर रहा था।

कलीसिया को मत्ती 18:15-20 जैसी और आयतों की आवश्यकता है, क्योंकि हम आम तौर पर पाप में पड़े किसी भाई या बहन को अनुशासित करने से हिचकिचाते हैं। परन्तु अपने अध्ययन के इस भाग को हम उस आयत के साथ समाप्त करेंगे, जिसे मैं इस चर्चा में

प्रमुख मानता हूं: ''यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा। यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया'' (आयत 15)। यदि हम वैसे ही करें, जैसे हमें करना चाहिए, तो बहुत सी समस्याएं हल हो जाएंगी और कलीसिया के अनुशासन की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।

क्षमा का ध्यान (आयतें 21-35)

गलती करने वाले किसी भाई के पास जाने पर यीशु की शिक्षा से पतरस को यह जानने की इच्छा हुई कि ऐसे भाई को उसे कितनी बार क्षमा करना चाहिए। उसने पूछ लिया, ''हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात बार तक?'' (आयत 21)।[12] उसने सोचा होगा कि वह उद्धार होने जा रहा है, क्योंकि रब्बी लोग केवल तीन बार ही क्षमा की बात कहते थे। मुझे कोई संदेह नहीं है कि मसीह के उत्तर से वह हैरान रह गया होगा, ''मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार, वरन सात बार से सत्तर गुणा तक'' (आयत 22)। अन्य शब्दों में, क्षमा करने की कोई सीमा नहीं होनी चाहिए।

फिर प्रभु ने ''निर्दयी सेवक का दृष्टांत'' बताया, जिसमें एक सेवक ने जिसका बड़ा कर्ज क्षमा कर दिया गया था, एक साथी का थोड़ा सा कर्ज क्षमा करने से इनकार कर दिया था (आयतें 23-35)। इसकी स्पष्ट प्रासंगिकता यह है कि परमेश्वर ने हमें इतना क्षमा किया है कि हमें भी दूसरों को क्षमा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

मत्ती 18:15-35 में प्रभु की शिक्षाएं अपने भाइयों के साथ सम्बन्धों में या किसी के साथ भी सम्बन्धों में बहुत ज़रूरी हैं। उसने हमारे लिए दो सिद्धान्त बना दिए हैं: (1) जब आपको किसी के विरुद्ध कुछ कहना हो, तो सबसे शिकायत करने के बजाय, उस व्यक्ति के पास जाएं; और (2) मन में मैल न रखें, बल्कि क्षमा करने को तैयार रहें।

भविष्य के लिए प्रतिबद्धता
(मत्ती 19:1; लूका 9:51-62; यूहन्ना 7:1-10)

मत्ती 19:1 कहता है कि ''जब यीशु ये बातें [जिनका हमने अभी-अभी अध्ययन किया है] कर चुका, तो गलील से चला गया और यहूदिया के देश में ... आया।'' दृश्य बदलकर दक्षिण में चला जाता है।

यदि आपकी याददाश्त अच्छी है तो आपको याद होगा कि आरम्भ में यीशु की सेवकाई यहूदिया में थी, जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बन्दी बनाए जाने पर समाप्त हुई थी। मसीह, यहूदिया से, उत्तर की ओर गलील में चला गया था। यूहन्ना ने लिखा है कि ''यहूदी उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे, इसलिए वह यहूदिया में फिरना न चाहता था'' (यूहन्ना 7:1)।[13] परन्तु अब उसके लिए अपनी सेवकाई के आरम्भ के दृश्य अर्थात सामान्य अर्थ में यहूदिया में और विशेषकर यरूशलेम में लौटने का समय था।

मज़ाक उड़ाए जाने के बावजूद प्रतिबद्ध (यूहन्ना 7:2-10)

उसकी सेवकाई का यह नया चरण झोंपड़ियों या डेरों के पर्व में यरूशलेम जाने के साथ आरम्भ हुआ। झोंपड़ियों का पर्व यहूदियों के तीन प्रमुख पर्वों में से एक था (लैव्यव्यवस्था 23:39-43; व्यवस्थाविवरण 15:12-15); यह पर्व सितम्बर के अन्त में या अक्तूबर के आरम्भ में मनाया जाता था।

इस पर्व के निकट आने पर (यूहन्ना 7:2), यीशु के सौतेले भाई[14] उससे समारोह में जाने का आग्रह करने लगे, ताकि यहूदिया में उसके चेले वैसे ही आश्चर्यकर्म देख सकें, जो उसने गलील में किए थे (आयतें 3, 4)। आयत 5 के अनुसार, ये भाई उस पर विश्वास नहीं करते थे,[15] इसलिए शायद उनकी बातें ताने मारने जैसी होंगी। मसीह के उत्तर से यह संकेत मिला कि *उनके* लिए यरूशलेम में जाने में कोई समस्या नहीं होनी थी, क्योंकि यहूदी अगुओं की ''मोस्ट वांटेड'' सूची में उनका नाम नहीं था, परन्तु *उसके* लिए जाना खतरनाक होना था (आयतें 6-8)। इसी कारण जब कारवां यरूशलेम की ओर चल पड़ा, तो वह और उसके चेले दूसरों के साथ नहीं गए (आयत 9)। परन्तु बाद में वे चुपके से पर्व में गए अवश्य (आयत 10)।

क्योंकि अन्ततः यीशु पर्व में चला गया, इसलिए आयत 8 में उसके शब्द उलझाने वाले हैं: ''मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता, क्योंकि अभी तक मेरा समय पूरा नहीं हुआ।'' कुछ टीकाकारों का सुझाव है कि यीशु ने कहा कि वह नहीं जाएगा, परन्तु फिर उसने मन बदल लिया और चला गया। कुछ टिप्पणियां यीशु के स्वभाव से[16] और उसके कार्यक्रम से मेल नहीं खाती लगतीं (लूका 9:51)।

यीशु के शब्दों और बाद में उसके चले जाने पर स्पष्ट विवाद को सुलझाने के लिए कई व्याख्याएं दी गई हैं। कुछ लोग यह सुझाव देते हैं कि यीशु के कहने का यह अर्थ था कि वह *वैसे* नहीं जाएगा, जैसे उसके भाइयों ने सुझाव दिया था-अर्थात आश्चर्यकर्म करने वाला बनकर।[17] दूसरे लोग वाक्य के अन्तिम भाग पर ध्यान देते हुए यह विश्वास करते हैं कि इस वाक्य का अर्थ है ''मैं इस पर्व में *अभी* नहीं जाता''[18]-अर्थात, कारवां में यात्रियों के साथ नहीं-जो इस बात का संकेत था कि वह बाद में जा सकता था। सबसे प्रचलित व्याख्या यह है कि ''अभी'' शब्द वाक्य का भाग होना चाहिए, चाहे वचन में स्पष्ट हो या इसका अर्थ निकाला जाए। कई प्राचीन यूनानी हस्तलेखों में यीशु के शब्दों में ''अभी'' शब्द शामिल किया गया है। इस कारण NIV में ''मैं *अभी* इस पर्व में नहीं जा रहा, क्योंकि मेरे लिए अभी सही समय नहीं आया''[19] है। वारेन वियर्सबे ने लिखा है, ''यीशु झूठ नहीं बोल रहा था या टाल नहीं रहा था; बल्कि वह सोच-समझकर सावधानी बरत रहा था।''[20]

वह परिवार के लोगों और दूसरे लोगों के पर्व में जाने के बाद, कई और दिन गलील में ही ठहरा रहा। फिर वह और उसके चेले यरूशलेम के लिए चल पड़े, ''प्रकट में नहीं, परन्तु मानो गुप्त रूप से'' (आयतें 9, 10)।

ठुकराए जाने के बावजूद समर्पित (लूका 9:51-56)

लूका यीशु के यरूशलेम दौरे के बारे में बताता है। देरी से जाने के कारण प्रभु ने यहूदिया को जाने का सामान्य मार्ग नहीं पकड़ा, जो यरदन नदी के पूर्वी किनारे के साथ-साथ जाता था। इसके बजाय, वह सामरिया के बीच में से छोटे और कम लोगों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले रास्ते से गया।

सामरी लोगों ने, जिन्होंने गलील जाते समय प्रभु को ग्रहण किया था (यूहन्ना 4:40), यह पता चलने पर कि वह पर्व मनाने के लिए यरूशलेम में जा रहा है, उसे वहां ठहराने से मना कर दिया था (लूका 9:53)। उन्होंने यरूशलेम के मन्दिर में आराधना के लिए जाने को गिराजीम पर्वत पर सामरियों के मन्दिर का त्याग करना माना होगा (देखें यूहन्ना 4:20)।

याकूब और यूहन्ना, अर्थात ''गर्जन के पुत्रों'' (मरकुस 3:17) ने यीशु से पूछा कि क्या वे आकाश से आग गिराकर उन्हें नष्ट कर दें (लूका 9:54), जैसे एलिय्याह ने अपने शत्रुओं के साथ किया था (2 राजा 1:10, 12)।[21] यीशु ने उन्हें डांटा (लूका 9:55); उसने उन्हें अपने शत्रुओं को नष्ट करने की शिक्षा नहीं दी थी, बल्कि उनसे प्रेम करने और उनके लिए प्रार्थना करना सिखाया था (मत्ती 5:44, 45)।[22] पहले उसने उन्हें आज्ञा दी थी कि किसी एक नगर में ठुकराए जाने पर वे दूसरे नगर में चले जाएं (मत्ती 10:23)। अब उसने यह करके भी दिखा दिया (लूका 9:56)।

विमुखता के बावजूद समर्पित (लूका 9:57-62)[23]

यरूशलेम जाते हुए, मसीह को जोश रहित, होने-वाले चेले मिले। अपनी मृत्यु के निकट होने की बात जानते हुए यीशु उन्हें किसी गलत दावे से अपने अनुयायी नहीं बनाना चाहता था। कठिनाई आने वाली थी; ऐसे समयों में केवल समर्पित और एक निष्ठा वाले लोगों का विश्वास ही स्थिर रह सकता था। यानी एक बार निर्णय लेने के बाद, वापस आने का सवाल ही नहीं था।[24]

महिमा से विवाद (यूहन्ना 7:11-8:11)

मण्डपों के पर्व में यीशु के जाने की बात यूहन्ना की पुस्तक में लिखी गई है। कहानी को समझने के लिए, यह जानना आवश्यक है कि इसमें तीन अलग-अलग गुटों का उल्लेख है, (1) यरूशलेम के धार्मिक अधिकारियों को आम तौर पर ''यहूदियों'' के रूप में सम्बोधित किया गया है (यूहन्ना 7:13, 15, 35)।[25] इस गुट के अगुओं को ''महायाजकों और फरीसियों'' कहा गया है (7:32; देखें आयतें 45, 47, 48), जो महासभा को सम्बोधित करने का ढंग है।[26] (2) अपने घर यरूशलेम में बना लेने वाले यहूदी वहीं थे (7:25)। (3) पर्व के लिए मिली-जुली भीड़ को ''भीड़'' (7:12, 20, 31, 32, 43) और ''लोगों'' कहा गया है (7:43)। कई बार यह संख्या पहले दो गुटों के प्रतिनिधियों की होती थी, मुख्यत: इसमें दूसरे स्थानों से आए यात्री ही होते थे।

पर्व का आरम्भ होना: यीशु के व्यवहार पर विवाद (7:11-13)

पर्व के आरम्भ होने पर, चर्चा का मुख्य विषय यीशु ही था।[27] वह कई महीनों से यरूशलेम में था,[28] और लोग अनुमान लगा रहे थे कि वह इस पर्व में आएगा भी या नहीं (आयत 11)। पर्व में आने वालों में चुपके-चुपके बातें होने लगीं (आयत 13; यूहन्ना 9:22 से तुलना करें): ''कितने कहते थे; वह भला मनुष्य है: और कितने कहते थे; नहीं, वह लोगों को भरमाता है'' (यूहन्ना 7:12ख, ग)। बाद का अवलोकन उससे अधिक महत्व रखता था, जिसका इसके बोलने वालों को अहसास नहीं था। आज बहुत से लोग यीशु को परमेश्वर नहीं मानना चाहते, परन्तु वे उसे ''भला मनुष्य'' अवश्य कहते हैं। यदि मसीह परमेश्वर का पुत्र नहीं था, जैसा कि उसने दावा किया तो वह भला मनुष्य हो नहीं सकता, क्योंकि झूठ बोलने वाले भले लोग नहीं होते। जो लोग यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहते, उन्हें चाहिए कि वे उसे ''भला मनुष्य'' कहकर उसकी चापलूसी करना बन्द कर दें।

पर्व के मध्य में: यीशु की सिफ़ारिशों पर विवाद (7:14-36)

''पर्व के आधे दिन बीत'' (आयत 14क) जाने पर जो सम्भवतया समारोह का चौथा दिन अर्थात मंगलवार था, यीशु सामने आ गया।[29] वह ''मन्दिर में जाकर[30] उपदेश करने लगा'' (आयत 14ख)। लड़कपन में, वह मन्दिर में सीखने के लिए जाता था (लूका 2:46); अपनी सेवकाई के आरम्भ में, उसने मन्दिर को शुद्ध किया था (यूहन्ना 2:13-17); परन्तु अब वह वहां सिखाने के लिए गया था। याद रखें कि मन्दिर धार्मिक अधिकारियों का गढ़ था। यीशु अपने भावी हत्यारों का सामना करने से नहीं झिझका। शेर की गुफ़ा में जाकर उसने शेरों की दाढ़ी पकड़ ली थी।

यह पहली बार था, जब अगुओं में से बहुत से लोगों को प्रभु को सुनने का अवसर मिला और उसकी शिक्षा ने उन्हें ''चकित'' कर दिया था।[31] वे पूछने लगे, ''इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई?'' (यूहन्ना 7:15)। ''बिन पढ़े'' से उनका अर्थ था कि उसने रब्बी बनने का विधिवत प्रशिक्षण कभी नहीं पाया था। आज लोग कह सकते हैं, ''उसने तो किसी यूनिवर्सिटी से डिग्री नहीं पाई है!'' वास्तव में यीशु का उत्तर था कि उसे मनुष्यों की ओर से ''प्रमाणपत्र'' या ''लाइसेंस'' लेने की आवश्यकता नहीं, बल्कि उसे तो परमेश्वर की ओर से भेजा गया था (आयतें 16, 18, 28, 29) और वह वही सिखा रहा था, जो *परमेश्वर* ने उसे सिखाने के लिए कहा था (आयत 16)।

उसने कहा, ''यदि कोई उस [परमेश्वर] की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश [अर्थात, जो वह सिखा रहा था] के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूं'' (आयत 17)। किसी भी बात को समझने के लिए उचित व्यवहार[32] होना आवश्यक है, परन्तु परमेश्वर के वचन को समझने के लिए यह और भी आवश्यक है। परमेश्वर की शिक्षा धार्मिक अगुओं के लिए एक पहेली बनी रही, क्योंकि परमेश्वर की इच्छा को जानने का दावा करने के बावजूद, वे वास्तव में इसे समझते नहीं थे।

यह प्रमाण देते हुए कि अधिकारी लोग परमेश्वर की आज्ञा नहीं मान रहे थे, यीशु ने ध्यान दिलाया कि उन्होंने छठी आज्ञा तोड़ने की योजनाएं बनाई थीं (निर्गमन 20:13)। उसने कहा, ''क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी? तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता। तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो?'' (यूहन्ना 7:19)। वह उनके षड्यन्त्र को जानता था (यूहन्ना 5:18; 7:1) और उन्हें बताना चाहता था कि वह सब जानता है।

नगर से बाहर की भीड़ ने, जो परिस्थिति से अनभिज्ञ थी, उत्तर दिया, ''तुझ में दुष्टात्मा है; कौन तुझे मार डालना चाहता है?'' (आयत 20)। यीशु पर पहले भी दुष्टात्मा होने का आरोप लगाया गया था (मत्ती 9:32–34; 10:25; 12:24), पर इन शब्दों का अर्थ केवल इतना था कि ''तू पागल हो गया है!'' (देखें यूहन्ना 10:20)।

इस प्रश्न ने कि यीशु सचमुच मृत्यु की बात कर रहा था या नहीं, यरूशलेम में पिछले दौरे की याद दिला दी, जिसके अन्त में यहूदी अगुवे ''और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे'' थे (यूहन्ना 5:18)। उस अवसर पर, यीशु ने सब्त के दिन एक आदमी को चंगा किया था (यूहन्ना 5:1–9) और उसे अपने इस काम की सफाई देने के लिए विवश किया गया था। अब उसने सब्त के दिन चंगाई के लिए एक और तर्क दिया: उसने ध्यान दिलाया कि सब्त के दिन खतना करने को सब सही मानते थे (7:22, 23क)।[33] वास्तव में उसके कहने का अर्थ यह समझा जा सकता है कि ''यदि सब्त के दिन शरीर के एक अंग को पवित्र करना उचित है, तो जब मैंने पूरे शरीर को शुद्ध किया है तो तुम क्यों क्रोधित होते हो?'' (आयत 23ख)।

जब प्रभु ने उपदेश देना जारी रखा, तो यरूशलेम में रहने वाले लोग (जो हत्या की योजना के बारे में जानते थे) हैरान हो गए कि वह मन्दिर में इतने खुले आम सिखा रहा था (आयतें 25, 26क)। तौ भी, उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि वह मसीह नहीं हो सकता: ''इसको तो हम जानते हैं, कि यह कहां का है; मसीह जब आएगा, तो कोई न जानेगा कि वह कहां का है'' (आयत 27)। अधिकतर यहूदियों का विश्वास था कि मसीहा का जन्म बैतलहम में होगा (यूहन्ना 7:42; मत्ती 2:5, 6)। कुछ ही का विश्वास था कि मलाकी 3:1 और यशायाह 53:8 जैसे पद सिखाते हैं कि मसीहा का आना रहस्य भरा होगा।

चर्चा के दौरान, भाग लेने वाले अपनी अज्ञानता को दिखाते थे, क्योंकि वे यीशु के जन्म स्थान को नहीं जानते थे: (देखें यूहन्ना 7:41)। वास्तव में मसीह ने उत्तर दिया, कि वे उसके सांसारिक जन्म के बारे में जानें या न,[34] परन्तु जो बात वे नहीं समझते थे वह यह थी कि वह स्वर्ग से ही आया था (आयतें 28, 29)।

यीशु ने भीड़ के लोगों को इतना प्रभावित किया कि वे उसमें विश्वास करने लगे (आयत 31)। उनका विश्वास थोड़ा था, कि वे यकीन कर सकते; परन्तु यह महायाजकों और फरीसियों को क्रोध दिलाने के लिए काफ़ी था, जिन्होंने उसे पकड़ने के लिए मन्दिर के पहरेदारों को भेजा था (आयत 32)। बिना परेशान हुए, मसीह प्रचार करता रहा: ''मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूं, तब अपने भेजने वाले के पास चला जाऊंगा। तुम मुझे ढूंढ़ोगे, परन्तु नहीं पाओगे, और जहां मैं हूं वहां तुम नहीं आ सकते'' (आयतें 33, 34)।

हम क्रूस के इस ओर रहते हैं, इसलिए हमें उसके शब्दों की समझ है। ''मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूं'': उसकी मृत्यु में केवल छह महीने शेष थे। ''तब अपने भेजने वाले के पास चला जाऊंगा'': उसने परमेश्वर के पास ऊपर उठाया जाना था। ''तुम मुझे ढूंढ़ोगे, परन्तु नहीं पाओगे और जहां मैं हूं, वहां तुम नहीं आ सकते'': ये शब्द अवसर गंवाने के बारे में हैं (देखें होशे 5:6), अविश्वास से त्रासदी होने वाली थी। अगले दिन, यीशु ने कहना था, ''मैं जाता हूं और तुम मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पाप में मरोगे: जहां मैं जाता हूं, वहां तुम नहीं आ सकते''; ''... क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:21, 24)।

हम समझ सकते हैं कि यीशु के कहने का क्या अर्थ था, परन्तु यहूदी अगुवे उलझन में पड़ गए थे। उन्हें लगता होगा कि वह पलिश्तीन से निकलकर गैर यहूदियों में प्रचार करने की बात कर रहा है (7:35, 36)।[35]

पर्व का अन्तः यीशु के दावों पर विवाद (यूहन्ना 7:37-52)

अगली लिखित घटना ''पर्व के अन्तिम दिन, जो मुख्य दिन है'' घटी (आयत 37क)। उस दिन की विशेष बात पानी का संस्कार था, जिसके दौरान एक याजक शीलोह के कुण्ड से सोने का मटका भरकर उस पानी को बड़े समारोह में, वेदी के सामने डाल देता था। यह समारोह उस समय की याद दिलाता था, जब परमेश्वर ने उनके पूर्वजों को जंगल में पानी दिया था (निर्गमन 17:5, 6; गिनती 20:7-11) और मसीहा के आने पर परमेश्वर के आत्मा के उण्डेले जाने की राह देखता था (योएल 2:28; देखें प्रेरितों 2:16, 17)।

उस दिन, ''यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से[36] जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी'' (यूहन्ना 7:37ख, 38)। सोने का मटका अब खाली था, पर उसके सुनने वालों को जल की नदियां देने की पेशकश की गई थी, जो कभी सूख नहीं सकती थीं।

यूहन्ना ने मसीह के शब्दों की परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई व्याख्या दी है: ''उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था'' (आयत 39)।[37] यह मसीह के स्वर्ग पर उठाए जाने के बाद पहले पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उतरने की बात थी (प्रेरितों 1:8; 2:1-4, 16, 17, 38)। जैसे चट्टान में से पानी निकालकर लोगों की शारीरिक प्यास बुझाई गई थी, वैसे ही परमेश्वर के आत्मा ने यीशु में भरोसा रखने वालों की आत्मिक प्यास को बुझाना था।

यीशु की बातें सुनने वाले लोग आपस में बंट गए (यूहन्ना 7:43)। कुछ का विचार था कि वह मूसा जैसा नबी था (आयत 40; देखें व्यवस्थाविवरण 18:15)। कुछ का विचार था कि यही मसीहा होगा (यूहन्ना 7:41क)। कइयों ने कहा कि वह मसीहा नहीं हो सकता, क्योंकि (उनके विचार से) वह दाऊद के नगर बैतलहम से नहीं बल्कि गलील

से आया (आयतें 41ख, 42; देखें 2 शमूएल 7:12-16; मीका 5:2-4)।

मसीह की शिक्षा से प्रभावित होने वालों में उसे पकड़ने के लिए आने वाले लोग भी थे (यूहन्ना 7:32)। अधिकारियों के पास खाली हाथ लौटने पर जब उनसे पूछा गया कि वे यीशु को क्यों नहीं लाए (आयत 45) तो उनका उत्तर था, ''किसी मनुष्य ने कभी ऐसे बातें नहीं कीं'' (आयत 46)।

फरीसी क्रोधित हो गए (आयत 47)। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि यीशु मसीहा *नहीं* हो सकता: (1) क्योंकि *वे* उस में विश्वास नहीं करते थे (आयत 48), (2) क्योंकि उस पर विश्वास करने वालों को पता नहीं था[38] (आयत 49), और (3) क्योंकि गलील से कभी कोई नबी नहीं निकला था (आयत 52)।[39] उनमें से एक निकुदेमुस नामक (जो पहले रात के समय यीशु के पास आया था [यूहन्ना 3:1, 2]) आदमी ने ध्यान दिलाया कि बिना उचित मुकदमे के किसी व्यक्ति को दोषी ठहराना गलत है (यूहन्ना 7:50, 51; देखें व्यवस्थाविवरण 1:16, 17; 19:15-21)।[40] निकुदेमुस की बातों का इतना ही असर हुआ कि वे उलटे उसी के पीछे हो गए (7:52)।

बाइबल स्पष्ट कर देती है कि वे प्रभु को इसलिए पकड़ नहीं पाए (आयतें 30क, 44) ''क्योंकि उसका समय अब तक न आया था'' (आयत 30ख; 8:20 भी देखें)। उसकी मृत्यु का ''समय'' या घड़ी निकट थी, जिसमें केवल छह माह रह गए थे, परन्तु यह समय अभी आया नहीं था।[41]

पर्व के बाद: यीशु के ध्यान पर विवाद (यूहन्ना 7:53-8:11)

यूहन्ना 7:53-8:11 विलक्षण है। यद्यपि यह भाग अति प्राचीन हस्तलेखों में नहीं मिलता, परन्तु नये नियम के अधिकतर अनुवादों में पाया जाता था, कुछ में, इसे बाइबल का भाग माना जाता है (KJV; NKJV); शेष अधिकतर में इसे पवित्र शास्त्र में शामिल किया जाता है, परन्तु किसी तरह अलग करके (NASB; NIV; RSV)। विद्वान इस बात से सहमत हैं कि ये आयतें यूहन्ना के मूल हस्तलेख का भाग थीं या नहीं, परन्तु यह घटना सचमुच में घटी थी।

पर्व के अन्त में, अधिकतर लोग अपने घरों को लौट गए (यूहन्ना 7:53), परन्तु यीशु वहीं रहा। उसने रात जैतून के पहाड़ पर बिताई (8:1),[42] सम्भवतया अपने चेलों द्वारा बनाए गए किसी आश्रय में, जिन्हें तैयारी करने के लिए पहले भेजा गया था (लूका 9:52)। अगली सुबह वह मन्दिर में लौटकर उपदेश दे रहा था (यूहन्ना 8:2, 20)। उसके श्रोता वही होंगे, जो यरूशलेम में रहने वाले थे, और उनके साथ कुछ यात्री भी होंगे, जो अभी गए नहीं थे।

उसे उसके शत्रुओं द्वारा बीच में रोक दिया गया, जो ''एक स्त्री को लाए, जो ... व्यभिचार करते ही पकड़ी गई'' (यूहन्ना 8:3, 4) थी। उन्होंने उससे कहा, ''मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह करें: सो तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है?'' (यूहन्ना 8:5)। इन कपटियों को व्यवस्था की कोई परवाह नहीं थी क्योंकि अगर

होती, तो वे उस आदमी को भी लाते, जो उसके साथ व्यभिचार कर रहा था। व्यवस्था में कहा गया था कि पुरुष और स्त्री *दोनों* को पत्थरवाह किया जाए (लैव्यव्यवस्था 20:10; व्यवस्थाविवरण 22:22)। उन्हें न्याय या परमेश्वर की आज्ञा मानने की चिंता नहीं थी, उनकी दिलचस्पी तो यीशु को घेरने में थी (यूहन्ना 8:6क)।

मसीह ने उनसे कहा, ''तुम में जो निष्पाप हो, वही पहिले उसको पत्थर मारे'' (यूहन्ना 8:7), फिर वह झुककर मन्दिर के फर्श पर पड़ी धूल में उंगली से लिखने लगा[43] (8:8)। उसके उठने तक आरोप लगाने वाले जा चुके थे (8:9, 10)।

यीशु ने पूछा, ''हे नारी, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी'' (यूहन्ना 8:10)। उसने उत्तर दिया, ''हे प्रभु, किसी ने नहीं'' (8:11क)। फिर मसीह ने कहा, ''मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना'' (यूहन्ना 8:11ख)। धार्मिक अगुओं ने पापी के साथ अपमानजनक व्यवहार किया था। व्यवस्था पापी को मृत्यु का दण्ड देती थी। प्रभु ने पापी के साथ सम्मान सहित व्यवहार किया। उसने उसके पाप की अनदेखी नहीं की (उसने उससे ''फिर पाप न करना'' कहा); परन्तु उस पर अनुग्रह दिखाया, और उसे दूसरा अवसर दिया। हम में से हर किसी को अनुग्रह और दूसरे अवसरों की आवश्यकता है, या नहीं?

सारांश

इस पाठ में जीवन को बदलने वाले सिद्धान्त हैं। आइए उनमें से चार पर फिर से विचार करते हैं:

- यदि यीशु परमेश्वर नहीं है, तो वह भला मनुष्य भी नहीं है (यूहन्ना 7:12)। हर मनुष्य के लिए निर्णय लेना आवश्यक है कि वह यह विश्वास करे या न कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है।
- यीशु स्वर्ग में अपने पिता के पास लौट गया है; हम उस पर विश्वास नहीं करते, तो हम कभी वहां नहीं जा सकते, जहां वह है (यूहन्ना 7:33, 34; 8:21, 24)।
- यदि हम यीशु में विश्वास लाकर उसकी इच्छा के प्रति समर्पित हो जाते हैं, तो वह हमें अपना आत्मा देगा और हमारे जीवनों को आशीष से भरपूर करेगा (यूहन्ना 7:37-39; देखें प्रेरितों 2:38)। मसीही होने के बावजूद हम अपने जीवनों को उलझा देते हैं, तो वह हमें एक और अवसर देगा (यूहन्ना 8:11), यदि हम पश्चाताप और प्रार्थना में उसके पास वापस आएं (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9)।

यदि अभी आपने अपने पिछले पापों से उद्धार के लिए बपतिस्मा लेकर मसीह में अपने विश्वास को व्यक्त नहीं किया है (मरकुस 16:15, 16) तो अभी समय है कि आप अपना विश्वास दिखाएं। यदि आप परमेश्वर की अविश्वासी सन्तान हैं तो घर वापसी का

समय अभी है। मण्डपों के पर्व के दौरान यीशु को उपदेश देते सुनने वाले अधिकतर लोगों ने उद्धार का अवसर गंवा दिया था; आप अपना अवसर न खोएं!

नोट्स

इस पाठ के लिए दिए गए बाइबल पाठ में प्रचार की अपार सम्भावनाएं हैं।

नि:संदेह आपको और सम्भावनाएं मिल जाएंगी। यूहन्ना 7:46 पर कई टैक्सचुअल सरमन दिए जा चुके हैं: ''किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं कीं।'' कभी किसी मनुष्य ने पाप, मसीही जीवन, विवाह, उद्धार तथा नरक के बारे में ऐसे नहीं बताया जैसे यीशु ने बताया।

टिप्पणियां

[1]''ऊपर उठाए जाना'' शब्द में उसकी मृत्यु, गाड़े जाना और पुनरुत्थान सिमट जाता है; पृथ्वी पर अपना मिशन पूरा किए बिना स्वर्ग में ऊपर उठाया जाना नहीं हो सकता था। [2]इसे भंवर में एक छोटे छाल से समझाया जा सकता है, जो घूमते-घूमते भंवर के बीच में आता रहता है। [3]द लिविंग बाइबल। [4]अन्तिम वाक्यांश, यद्यपि अच्छे हस्तलेखों में नहीं मिलता, इसमें इस भाग की मुख्य बात का संदेश मिलता है। (एक तुलनात्मक वाक्यांश छह आयतों के बाद आयत 21 में मिलता है।) परन्तु यह समझ लें कि क्योंकि यह वाक्यांश आयत 15 में नहीं मिलता, इसकी व्यक्तिगत तुलना में व्यापक प्रासंगिकता अधिक है। जब भी कोई भाई किसी ऐसे पाप में पड़े जिससे उसके प्राण की हानि हो सकती हो, तो हम में से हर एक की ज़िम्मेदारी है कि प्रेम से उसके पास जाएं। [5]पहाड़ी उपदेश में यीशु ने समझाया कि यदि आपको मालूम है कि किसी भाई ने आपके विरुद्ध कुछ किया है तो क्या करना चाहिए: उसके पास जाएं (मत्ती 5:23, 24)। यहां वह यह बात कर रहा था कि यदि आप किसी भाई के विरुद्ध कुछ करना चाहते हैं, तो आपको क्या करना चाहिए: उसके पास जाएं। यदि झगड़ा करने वाले दोनों पक्ष मसीही लोगों की तरह काम करें, तो वे दोनों ही जाएंगे ... और रास्ते में कहीं एक-दूसरे से मिल जाएंगे। परन्तु यदि दोनों में से एक वह काम नहीं करता, जो उसे करना चाहिए, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि दूसरा छूट गया: आप गलती करने वाले हैं या किसी ने आपके साथ गलत किया है, दूसरे व्यक्ति के पास जाकर उसे सुलझाने की ज़िम्मेदारी आपकी ही है। [6]गेयल ओलर कुइंलन, टैक्सस में कई साल तक बोल्ज़ चिल्ड्रन होम का अधीक्षक था। मैंने उसे बहुत पहले मिड वैस्ट सिटी, ओक्लाहोमा में ईस्ट साइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में यह कहते सुना था। [7]अगली आयत से संकेत मिलता है कि वे केवल सुनने के लिए ही नहीं जाते। आयत 17 कहती है, ''यदि वह उनकी भी न माने''-जिसका अर्थ यह हुआ कि वे उससे बात करके झगड़ा करने वालों में सुलह करवाने का प्रयास करते हैं। [8]''कलीसिया'' शब्द सुसमाचार के वृत्तांतों, मत्ती 16 और 18 में केवल दो पदों में मिलता है। इस शब्द का पहला अर्थ विश्वव्यापी कलीसिया के लिए है। इस शब्द का दूसरा उपयोग स्थानीय मण्डली के लिए है। [9]यदि किसी मण्डली में ऐल्डर हैं, तो उन्हें मण्डली की आत्मिक भलाई से जुड़ी सब बातों में अगुआई करनी चाहिए। [10]मत्ती 18:15-17 से कलीसिया के अनुशासन के प्रश्न उठ सकते हैं। समय मिले तो आप इस विषय पर दूसरे पद जैसे 1 कुरिन्थियों 5 (देखें 2 कुरिन्थियों 2:4-11); 2 थिस्सलुनीकियों 3:6, 14, 15; 1 तीमुथियुस 5:20; और रोमियों 16:17 ले सकते हैं।

[11]आयत 19 वाली प्रतिज्ञा मत्ती 16:19 के अन्तिम भाग में पतरस से की गई पहली प्रतिज्ञा ही है। मत्ती 18:19 में मसीह सीधे प्रेरितों से बात कर रहा था, इसलिए अधिकतर टीकाकार इस प्रतिज्ञा को केवल उन्हीं के लिए मानकर चलते हैं। परन्तु संदर्भ कलीसिया के अनुशासन का विषय होने के कारण इसकी प्रासंगिकता

मण्डली के कार्य को माना जा सकता है। यदि कोई मण्डली वैसे ''बांधती'' है, जैसे स्वर्ग ने ''बांधा'' है (अर्थात वही करती है, जिसकी स्वर्ग से स्वीकृति है), तो उनका कार्य परमेश्वर को भाने वाला है। मत्ती 18:19 को हमें इस प्रतिज्ञा के रूप में नहीं लेना चाहिए कि दो मसीही लोग जो मांगें परमेश्वर उनके लिए कर देगा (1 यूहन्ना 5:19)। [12]यह तथ्य कि पतरस ने यह प्रश्न पूछा, हमें चकित करता है कि यीशु के संदेश से पहले होने वाली बहस में वह आलोचना का केन्द्र न बना हो। [13]यूहन्ना विशेष तौर पर गलील की महान सेवकाई के अन्तिम भाग की बात कर रहा था, परन्तु उसके शब्दों को उस पूरी सेवकाई को संक्षिप्त करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। [14]यह सौतेले भाई थे, क्योंकि यीशु और उनकी माता तो एक ही थी (मरियम), परन्तु पिता एक नहीं था (यीशु का पिता परमेश्वर था; उनका पिता यूसुफ था)। उनके नाम याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा थे (मत्ती 13:55; मरकुस 6:3)। [15]बाद में वे उस पर विश्वास ले आए (प्रेरितों 1:14; देखें 1 कुरिन्थियों 15:7); परन्तु यहां तक उन्होंने विश्वास नहीं किया था। [16]यीशु झूठ नहीं बोलता था (देखें यूहन्ना 7:18)। वह सच्चाई की मूर्त था और है (यूहन्ना 14:6)। [17]झोंपड़ियों के पर्व से जुड़ा एकमात्र लिखित आश्चर्यकर्म अन्धे आदमी को चंगा करने का है (यूहन्ना 9:1-41)। [18]कई यूनानी शब्दों का अनुवाद ''समय'' हुआ है; यूहन्ना 7:6 में प्रयुक्त शब्द का अर्थ ''*सही* समय'' हो सकता है। [19]अंग्रेज़ी के KJV तथा अन्य कई अनुवादों में ''yet'' शब्द शामिल गया है। [20]वारेन डब्ल्यू वियसर्बे, *बाइबल एक्सपोज़िशन कमैन्ट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 315.

[21]KJV में ''जैसे एलियास [एलिय्याह] ने किया'' है। कई प्राचीन हस्तलेखों में यह शब्द न होने के बावजूद, यह विचार पता चलता है, जो याकूब और यूहन्ना के मनों में होगा। क्या ये प्रेरित आकाश से आग बरसा *सकते* थे? हम नहीं जानते, पर निश्चय ही उन्हें *लगा* कि *यदि* प्रभु चाहे तो वे ऐसा कर सकते हैं। [22]यीशु की डांट की संक्षिप्त व्याख्या के KJV के शब्द ''मनुष्य का पुत्र लोगों के जीवनों का नाश करने नहीं, बल्कि उन्हें बचाने आया है'' हैं। ये शब्द, NASB में कोष्ठकों में मिलते हैं, पर विश्वसनीय प्राचीन हस्तलेखों में नहीं मिलते। [23]मत्ती 8:19-22 से तुलना करें। [24]यीशु ने इन होने-वाले चेलों से ऐसा कुछ करने के लिए नहीं कहा, जो वह स्वयं न करता हो। उसने ''अपना हाथ हल पर रखकर'' पीछे नहीं देखा (लूका 9:62)। [25]यह अजीब लग सकता है क्योंकि यरूशलेम में उस समय लगभग हर कोई यहूदी ही होगा; परन्तु आयत 13 ध्यान दिलाती है जहां *यहूदी* लोग *''यहूदियों''* के भय से नहीं बोलते थे। [26]''प्रधान याजक'' मुख्यतया सदूकी ही होते थे। [27]लोगों ने सम्भवतया गलील में किए उसके आश्चर्यकर्मों के बारे में सुना था। इसके अलावा, उन्हें यरूशलेम के पिछले एक दौरे के समय कुण्ड के निकट एक लंगड़े को चंगा करने पर उठा विवाद भी नहीं भूला था (यूहन्ना 7:21-23; देखें यूहन्ना 5)। [28]पिछला लिखित समय पर्व के दौरान था, जब यीशु ने एक लंगड़े को चंगा किया था (यूहन्ना 5:1)-सम्भवतया डेढ़ वर्ष पूर्व फसह के पर्व पर। [29]वचन यह नहीं कहता कि यीशु यरूशलेम में पहले पहुंच चुका था या नहीं। यह मानना तर्कसंगत लगता है कि वह अभी-अभी पहुंचा था, जब मन्दिर में गया। [30]वह सुलैमान के ओसारे में गया होगा (देखें यूहन्ना 10:23; प्रेरितों 3:11)। कुछ लोगों का मत है कि यूहन्ना 7:14, मलाकी 3:1 का पूरा होना ही है।

[31]यीशु की शिक्षा आमतौर पर लोगों को चकित करने वाली होती थी (देखें मत्ती 7:28, 29; 22:33; मरकुस 1:22; यूहन्ना 7:46)। [32]नासरत में यीशु के साथ लोगों की प्रतिक्रिया के ढंग पर विचार करें (मत्ती 13:54)। [33]यहूदी नर बच्चों का आठवें दिन खतना किया जाता था (लैव्यव्यवस्था 12:3), वह आठवां दिन चाहे सब्त के दिन ही पड़ता हो। [34]यीशु अपने वाक्य में कठोरता नहीं बरत रहा था ''तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहां का हूं'' (यूहन्ना 7:28)। [35]आयत 35 कहती है, ''... क्या वह उनके पास जाएगा, जो यूनानियों में तितर-बितर होकर रहते हैं, और यूनानियों को भी उपदेश देगा?'' ''तितर-बितर'' अन्य जातियों में बिखरे हुए यहूदी लोगों के लिए सप्तति अनुवाद में प्रयुक्त होने वाला यूनानी शब्द है। [36]मूल शास्त्र में ''पेट'' है (देखें KJV) परन्तु ''अन्दर से'' से बात स्पष्ट हो जाती है। [37]37 से 39 आयतों के विस्तृत अध्ययन के लिए, पुस्तक में आगे ''जीवन का जल'' पाठ देखें। [38]उन्होंने कहा कि भीड़ को व्यवस्था की जानकारी नहीं थी। उन्होंने भीड़ के लोगों के लिए यह भी कहा कि वे ''श्रापित'' थे। व्यवस्था के अनुसार परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने वाले श्रापित हैं (देखें व्यवस्थाविवरण 27:26)। हाकिम पूर्वधारणा से

भी अन्धे थे, जिससे उन्हें दिखाई दे पाता कि आज्ञा न मानने वाले विश्वासियों को नहीं बल्कि उन्हीं को कहा गया था। [39]कम से कम एक भविष्यवक्ता गलील से ही निकला था: योना (2 राजा 14:25)। फरीसियों ने पुराने नियम के प्रति और यीशु के मूल स्थान के प्रति अपनी अज्ञानता दिखा दी। बाद में यूहन्ना 9:29 में उन्होंने माना कि उन्हें पता नहीं था कि उसने कहां से आना था। [40]निकुदेमुस ने अपने विश्वास का अंगीकार नहीं किया था, पर कम से कम लोगों में प्रभु के लिए खड़ा तो हो गया था। उसने यूहन्ना 3 में अपनी प्रतिक्रिया के बाद विश्वास में काफ़ी उन्नति की थी।

[41]इसी समय, परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध से उसकी रक्षा की गई। इस अवसर पर यीशु के शत्रु इस तथ्य से नाराज हो गए कि भीड़ के कुछ लोग उसमें विश्वास लाए थे। [42]जैतून पहाड़ किद्रोन नामक नाले के पार नगर के पूर्व में था। [43]बाइबल स्पष्ट नहीं बताती कि उसने क्या लिखा, इसलिए अनुमान लगाना व्यर्थ है।

पलिश्तीन के सभी भागों में यीशु की अन्तिम सेवकाई

पलिश्तीन के सभी भागों में यीशु की अन्तिम सेवकाई लगभग छह महीने की थी–मण्डपों के पर्व से लेकर यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के फसह तक। इन छह महीनों के दौरान मसीह पूरे पलिश्तीन में (विशेषकर दक्षिणी भाग में) घूमा, परन्तु बीच-बीच में वह यरूशलेम में लौट आता था। इस काल को दो भागों में बांटा जा सकता है: बाद की यहूदिया की सेवकाई और पिरिया की सेवकाई। यूहन्ना बताता है कि बाद की यहूदिया की सेवकाई में क्या हुआ, जबकि लूका से हमें पिरिया की सेवकाई के बारे में पता चलता है।

इस काल को क्रमबद्ध करना आसान नहीं है। इसे क्रमबद्ध करने का एक ढंग यह है: लूका तीन बार यीशु के यरूशलेम में जाने की बात कहता है (लूका 9:51; 13:22; 17:11)। यूहन्ना तीन पर्वों के बारे में बताता है: डेरों या मण्डपों का पर्व, जिससे यह काल आरम्भ होता है (यूहन्ना 7:2); काल के मध्य में समर्पण का पर्व (यूहन्ना 10:22); और अन्त में फसह का पर्व (यूहन्ना 12:1)। हम तीन पर्वों को उन तीन स्थानों में डाल सकते हैं, जहां लूका यरूशलेम के दौरों का उल्लेख करता है। इस सामग्री को क्रमबद्ध करने का यह सुविधाजनक ढंग है, परन्तु याद रखें कि बिल्कुल क्रमबद्ध होने का इतना महत्व नहीं है। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों ने अपनी सामग्री को कैलेण्डर के अनुसार नहीं, बल्कि किसी उद्देश्य के अनुसार क्रमबद्ध किया: यीशु में विश्वास दिलाने के लिए (देखें यूहन्ना 20:31)।